ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-5* June- 2020
Innovation The Research Concept

हरिशंकर परसाई का आत्म संघर्ष

Harishankar Parsai's Self Struggle

Paper Submission: 12/06/2020, Date of Acceptance: 25/06/2020, Date of Publication: 30/06/2020

राकेश प्रसाद
सहायक अध्यापक ,
हिन्दी विभाग,
खोपलासी हिन्दी हाईस्कूल,
न्यूचमटा, दार्जिलिग
पश्चिम बंगाल, भारत

सारांश

हरिशंकर परसाई हिंदी के ऐसे पहले रचनाकार हैं जिन्होंने व्यंग्य को समाज के व्यापक प्रश्नों से संयुक्त किया उनके लेखन में अनुभवजन्य परिपक्वता है उन्होंने कबीर की भांति भारतीय समाज को अच्छी तरह जाँचा परखा और समाज के हर कोने में न्याय विसंगतियों और पाखण्डों से साक्षात्कार किया तथा आम आदमी के दर्द और पीड़ा को गहराई से अनुभव करते हुए उन विसंगतियों पाखंड और भ्रष्टाचार पर अपने व्यंग्य बाणों का प्रहार किया परंतु प्रत्येक क्रिया के बराबर और विपरीत प्रतिक्रिया होती है ठीक इसी सिद्धांत के अनुरूप समाज के शोषक भ्रष्टाचारी एवं पथभ्रष्ट लोगों ने इनके जीवन को कष्टमय बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। इन पर शारीरिक, मानसिक आर्थिक प्रहार किये गये। दुर्भाग्य ने भी इनका साथ नहीं छोड़ा परंतु परसाई जी ने अपने सामाजिक सामाजिक जिम्मेदारियों से कभी मुख नहीं मोड़ा, न जीवन में कभी विपत्तियों के समक्ष घुटना टेका वे हिमालय पर्वत की तरह दृढ़ बने रहे विपत्ति रूपी आंधियां चली और उनसे टकरा कर ढेर हो गई उन्होंने अपने सिद्धांतों से कभी समझौता नहीं किया और अनवरत लेखन कार्य में लगे रहे ।

Harishankar Parsai is the first creator of Hindi who combined satire with broader questions of society. His writing has an empirical maturity. He tested Indian society well like Kabir and interviewed justice anomalies and hypocrites in every corner of society and common Experiencing the pain and anguish of man deeply, attacked those anomalous hypocrisy and corruption with his satirical arrows, but each action has an equal and opposite reaction, according to the same principle, the exploitative, corrupt and misguided people of society have made their lives painful. It left no stone unturned to make. They were subjected to physical, mental and economic assault. Unfortunate also did not leave them, but Parsai ji never turned away from his social responsibilities, nor did he ever kneel before the disasters in his life. He remained as firm as the Himalayan mountains, the storms of calamity came and collided with him. Never compromised with his principles and continued in writing work.

मुख्य शब्द : आत्म संघर्ष, दुर्भाग्य, रचना धर्मिता, प्रतिबद्धता निर्भीक, व्यंग्य साहित्य।

Self-Struggle, Misfortune, Composition Religiosity, Commitment, Fearless, Satirical Literature.

प्रस्तावना

लौंग जाइनस के अनुसार, 'उदात्त उक्ति महान आत्माओं द्वारा ही संभव है' (Great litterance is the echo of the greatness- of soul Longinus)[1] एक सामान्य व्यक्ति का व्यक्तित्व उसकी कला अथवा साहित्य के माध्यम से उजागर होता है साहित्यकार अपनी लेखनी आंतरिक प्रतिमा और अपने भोगे हुए जीवन संघर्षों के संचित मूल्य के अनुभव के सशक्त साहित्य का सर्जन करता है । जिस मे संसार की काया पलट करने ने की शक्ति होती है तथा वह अपने पाठकों के मन मस्तिष्क को कमजोर कर सकता है एक उदात्त विचारों वाला व्यक्ति ही उदात्त भावों को अभिव्यक्त कर सकता है। ऐसी ही उदात्त भावनाएं हरिशंकर परसाई के व्यक्तित्व में निहित है

हरिशंकर परसाई जी अपने व्यंग्य के तीरों से शोषण कर्ताओं की कुटिल षड़यंत्रों के आवरण को क्षत–विक्षत कर संपूर्ण समाज के सामने नंगा किया। उन्होंने यह प्रदर्शित किया कि सभ्य कहलाने वाले सफेद पोशकों से ढँके हुए लोग तबीयत से कितने नंगे हैं। ऐसी महान प्रतिभाओं के धनी और आधुनिक युग के सुविख्यात साहित्यकार हरिशंकर परसाई में अपने युग की तत्कालीन

परिस्थितियों को जांचने परखने की अद्भुत क्षमता थी। यही कारण है कि उनका साहित्य अपने समाज की सच्चाई को जीवंतता के साथ उजागर करता है। वे इतने निर्भीक थे कि गलत को गलत कहने में कभी हिचकी चाहते नहीं थे। उनकी रचनाएँ विसंगतियों आडम्बरों और समाज में फैली अराजकता पर प्रहार करती नजर आती है।

अध्ययन का उद्देश्य

इस आलेख का उद्देश्य से महान प्रतिमा के धनी हरिशंकर परसाई जी के जीवन संघर्षों को दर्शाना है। आज जहां कुछ साहित्यकार पत्रकार और मीडिया कर्मी सत्ता पक्ष और पूंजीपत्तियों के गुलाम होकर उनके स्वर में स्वर मिला रहे हैं वहां हरिशंकर परसाई जी का आत्म संघर्ष आज की परिस्थितियों में प्रेरणा का विषय बन सकता है।

हरिशंकर परसाई जी का जन्म 22 अगस्त 1922 ईस्वी में मध्यपदेश के होशंगाबाद जिले में स्थित जमानी नामक ग्राम में हुआ था। कई पत्रिकाओं में उनका जन्म वर्ष 1924 में लिखा मिलता है। परंतु परसाई जी ने अपनी जन्मतिथि की सच्चाई को स्वयं बयान किया है वे लिखते हैं "मेरी जन्म तारीख 22 अगस्त 1924 ईस्वी में छपी है यह भूल है। तारीख ठीक है सन् गलत है सही सन् 1922 है। "मेरे पिता ने स्कूल में मेरी उम्र को दो साल कम लिखाई थी इस कारण कि सरकारी नौकरी के लिए मैं जल्दी ओवर एज नहीं हो जाऊं।[2] साधारणतः लोग अपनी उम्र छिपाते हैं पर परसाईं जी की स्वीकारोक्ति सराहनीय है इनकी माता का नाम चंपाबाई और पिता का नाम झूमकलाल था। ब्राह्मण होने के बावजूद उनके पिता पुरोहित कर्म से दूर के थे भाई के साथ जमीन जायदाद के झगडे के कारण झूमकलाल जमानी छोड़कर खिड़कियां चले आए और फिर अर्थाभाव के कारण मरदानपुर आ गए जहां उन्होंने जंगल निलामी लेकर लकड़ी का कोयला बनाने का कार्य आरंभ किया। यही रैहर गांव के प्राइमरी स्कूल में परसाई जी की प्रारंभिक शिक्षा आरंभ हुई। जब उनके पिता मजदूरों को डांटते थे तो परसाई जी बड़े दुखी हो जाते थे परसाई जी बचपन से ही गरीब मजदूर और शोषितों के प्रति बड़े संवेदनशील थे। प्राइमरी की शिक्षा पूरी करने बाद वे टीमरनी आ गए और यहीं से उन्होंने हाईस्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण की। परसाई जी पांच भाई बहन थे वे सबसे बड़े थे उनसे छोटी तीन बहने और एक भाई था। बुआ बटेसरी भी इन्हीं के साथ रहती थी। सहयोगी और कर्मचारियों की धोखाधड़ी के कारण पिताजी के काम धंधे में घाटा होने लगा। परिवार की आर्थिक स्थिति खराब होने लगी टीमरनी गांव में सन 1936–37 के आसपास प्लेग फैल गया। दुर्भाग्यवश परसाई जी की माता जी इस महामारी की चपेट में आ गई। अन्तवः माता जी की मृत्यु हो गई। इस समय परसाई जी आठवीं कक्षा में पढ़ रहे थे। आठवीं कक्षा में पढ़ने वाले बालक का इस प्रकार से छोटी उम्र में मातृ स्नेह से वंचित हो जाना वास्तव में एक ह्रदय विदारक घटना थी। परसाई जी के एक गुरु जिनका नाम केशवचद्र बग्गा था, वे उनसे बहुत प्रभावित थे उनके इसी गुरु ने उन्हें एक नया इतिहास बोध दिया और साहित्य को समझने की नई दृष्टि दी। इस प्रकार कठिन परिश्रम और लगन से उन्होंने मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण की। इसी बीच उनके पिता ने परसाई जी की बहन रुक्मणी का विवाह संपन्न कराया। उन्हें अर्थ अभाव के कारण मैट्रिक परीक्षा पास करने के उपरांत नौकरी करनी पड़ी। परसाई जी को जंगल विभाग में नौकरी मिली वहीं रहने के लिए सरकारी कमरा मिला जिसमें चूहों की भरमार थी। चूहों के उपद्रव के कारण कई रात वे सो नहीं पाए परंतु धीरे–धीरे परसाई जी ने परिस्थितियों से दोस्ती कर ली। वे इस संदर्भ में लिखते हैं "चूहों ने बड़ा उपकार किया है ऐसी आदत डाली कि आगे की जिंदगी में भी तरह–तरह के चूहे मेरे नीचे उधम करते रहे सांप तक सर्राते रहे मगर मैं पटिए बिछाकर सोता रहा हूं। चूहों ने ही नहीं मनुष्यनुमा बिच्छू ने और सांपों ने भी मुझे बहुत काटा पर जहर मोहर मुझ में शुरू में ही मिल गया।"

परसाई जी अपने सिद्धांतों से समझौता करना कभी सीखा ही नहीं था फलस्वरूप अपने डीपों के ऑफिसर भाला बख्स से मतभेद हो गया। परसाई जी ने नौकरी से त्यागपत्र दे दिया। अब वे खण्डवा आ गए वहां बग्गा मास्टर की सहायता से उन्हें एक प्राइवेट स्कूल में नौकरी मिल गई। मानसिक वेतन मात्र रू. 25 वह भी नियमित नहीं मिलता था यहीं से उन्हें जबलपुर टीचिंग में डिप्लोमा करने के लिए भेजा गया ट्रेनिंग पूरा करने के पश्चात ट्रेनिंग कॉलेज के प्राचार्य बाई जी रानाडे की सहायता से पुणे जबलपुर के मॉडल हाई स्कूल में अध्यापक की नौकरी मिल गई। इसी क्रम में उन्होंने नागपुर विश्वविद्यालय से एम ए किया था। जबलपुर के मॉडल हाई स्कूल में अध्यापन करते हुए पहली तनख्वाह मिली ही थी कि तार मिला कि इनके पिताजी नहीं रहे। अब परसाई जी पर पूरे परिवार की जिम्मेदारी आ गई। भाई को अपने साथ लेकर जबलपुर आ गए दूसरी बहन की शादी की जिम्मेदारी परसाई जी पर थी अतः शादी के लिए धन संचय करने लगे पर दुर्भाग्यवश पैसे चोरी हो गए फिर भी परसाई जी ने धैर्य नहीं खोया किसी प्रकार 1946 ईस्वी में दूसरी बहन का विवाह संपन्न कराया। विवाह संपन्न हुआ ही था कि बड़ी बहन विधवा हो गई। अब बड़ी बहन और उनकी संतानों की जिम्मेदारी भी परसाई जी के कंधों पर आ गई। सन 1959 ईस्वी में इन्हीं परिस्थितियों के बीच उन्होंने अपनी तीसरी बहन मोहिनी का विवाह संपन्न कराया परंतु दुर्भाग्य यहां भी परसाई जी का साथ नहीं छोड़ा कुछ ही दिनों के अंतराल में इनकी दूसरी बहन सीमा भी विधवा हो गई अब उसके परिवार का बोझ भी परसाई जी के कंधों पर आ गया इन सारी विपरीत परिस्थितियों के बावजूद परसाई जी ने कभी हार नहीं मानी, झुनझुलाहट में कभी गलत निर्णय नहीं लिया। वे लिखते हैं "मैंने तय किया परसाई डरो किसी से मत।डरे की मरे। सीने को ऊपर ऊपर से कड़ा कर लो अपने से बाहर निकलो देखो समझो और हंसो।"[3]

सन् 1942 ईस्वी में स्वतंत्रता आंदोलन अपने पूर्व यौवन पर था। उस समय जबलपुर के मध्य तिलक भूमि तलैया राष्ट्रीय आंदोलन का प्रमुख केंद्र था।वह स्थान

परसाई जी के बैठने का अड्डा बन गया था। यहां नगर के राजनीतिज्ञ साहित्यकार नेतागज आते रहते थे।

इन सबके साथ परसाई जी का बड़ा घनिष्ठ सम्बन्ध बन गया था। यही 'प्रहरी' पत्रिका और साहित्य संघ का भी कार्यालय था साहित्य संघ के अंतर्गत विभिन्न साहित्यिक गोष्ठियों होती रहती थी जिनमें परसाई जी भी शामिल होते थे परसाई जी में भाषण देने की अद्भूत कला थी। उन्होंने कभी परिस्थितियों के साथ समझौता नहीं किया। फलस्वरूप उनकी नौकरी चली गई नौकरी छोड़ कर परसाई जी स्वतंत्र लेखन में लग गए। उन्होंने 1952 ईस्वी में वसुधा नामक पत्रिका निकाली पर अर्थाभाव के कारण उसे बंद करना पड़ा। परसाई जी विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं के स्तंभ लेखन का काम करने लगे उनका स्तंभ लेख कबीरा खड़ा बाजार में तुलसीदास चंदन घिसे नर्मदा के तट से बहुत प्रसिद्ध रहा। दैनिक पत्र नई दुनिया में 'सुनो भाई साधो' शीर्षक से सप्ताहिक स्तंभ लिखते रहैं। सन 1965 के जनयुग में 'यह माजरा क्या है।' साप्ताहिक लेखमाला में 'आदम' नाम से तथा सारिका में 'कबीरा खड़ा बाजार में' रिटायर्ड भगवान की कथा, परिवर्तन में 'अरस्तू की चिट्ठी करंट' में 'देख कबीरा रोया' और 'माटी कहे कुम्हार' से आदि कालम लिखे। इनकी सभी प्रकाशित और अप्रकाशित रचनाओं को एकत्र कर राजकमल प्रकाशन ने नई दिल्ली से 'परसाई रचनावली' का प्रकाशन किया है। इसके कुल 6 खंड है 'परसाई रचनावली' खंड एक में कुल 98 रचनाएं हैं। 'परसाई रचनावली' खंड दो में 44 कहानियां और 70 लघु कथाएं हैं परसाई रचनवाली खंड तीन मैं कुछ विचारात्मक तथा पत्रात्मक निबंध है परसाई रचनावली खंड 4 में कुल 158 व्यंग्य निबंध है। परसाई रचनावली खंड 5 के स्तंभों में 160 तथा 78 निबंध है। इनमें उनके 2 स्तंभों सुनो भाई साधु और 'यह माजरा क्या है' की सामग्री है।

परसाई रचनावली खंड 6 में कुल 135 शीर्षको के पत्र काल्पनिक भेंट, भाषण, कहानी, लघु, नाटक, वसुधा की संपादकीय टिप्पणियॉ आदि संग्रहित है।

इस प्रकार इतने विपुल साहित्य सृजन और इतनी परेशानियों से मरे जीवन में कैसे संभव हुआ सत्य ही चिंतकों को आश्चर्य में डाल देता है जीवन के हर मोड़ पर विसंगतियों को झेलता हुआ लेखक कहीं भी टूटता बिखरता हुआ नहीं दिखता वरन अपने अथक कर्मशीलता, गहन, आत्मचिन्तन, बदलती हुई परिस्थितियों के प्रति विवेकशीलता का परिचय देता हुआ निरन्तर एक से एक नई रचनाएं प्रस्तुत करता जाता है।

जीवन के अंतिम पड़ाव पर पहुंचकर परसाई जी अस्वस्थ रहने लगे थे उनका एक पैर टूट गया था आगे चलकर उनकी एक आंख में मोतियाबिंद हो गया था। उनकी एक आंख का ऑपरेशन हुआ परंतु इन्फेक्शन होने के कारण एक आंख से देखना बंद हो गया फिर भी परसाई जी विचलित नहीं हुए विचलित होकर धैर्य खो देना तो उन्होंने सीखा ही नहीं था। आजीवन अविवाहित रहकर एक जिम्मेदार अभिभावक की तरह उन्होंने अपने भाई बहनों और उनके परिवार का देखभाल किया 10 अगस्त 1995 ईस्वी को रक्षाबंधन के दिन परसाई जी की मृत्यु हुई।

किसी भी राजनीतिक विचारधारा से प्रतिबद्ध लेखक के लिए उनकी प्रतिबद्धता इतनी खतरनाक रूप धारण कर लेती है कि उसकी जान पर बन आती है। इस प्रसंग पर शेरजंग गर्ग लिखते हैं, "प्रसिद्ध व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई को भी अपने फ्रांसिस्ट विरोधी धर्मग्रंथ लेखन के कारण जून 1973 में जबलपुर के कतिपय फ्रांसिस्ट समर्थकों की हिंसा का शिकार होना पड़ा था।" [5]

धर्म संस्कृति या राजनीति कोई भी क्षेत्र उनकी दृष्टि से परे नहीं था। वे जहां भी विसंगति और विद्रूपता देखते उस पर करारा प्रहार करते। इससे क्षुब्ध होकर कुछ लड़कों ने दल बनाकर उनके घर में प्रवेश किया और डंडों से उनकी पिटाई भी की पर इससे परसाई जी की प्रतिबद्धता कभी नहीं डगमगाई। वे लिखते हैं "दो कुत्ते आपस में लड़ रहे हो तब तो आदमी तटस्थ रह सकता है कि छोड़ों कुत्तों की लड़ाई है पर यदि कुत्ता किसी बच्चे पर लपटें तो उसका यह कर्तव्य नहीं है कि कुत्ते को मारे या बच्चे को बचाए। "मैं निश्चित रूप से उस वर्ग के साथ हूं जो अन्याय शोषण व अत्याचार के खिलाफ हैं।"[6]

निष्कर्ष

अन्ततः हम कह सकते हैं कि परसाई जी का जीवन संघर्षों से भरा हुआ था। जीवन भर संघर्ष करते हुए उन्होंने समाज को एक नई दिशा दी और विचारों से परिपूर्ण विपुल साहित्य देकर अपनी सृजनशीलता का परिचय दिया।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *गुप्त डॉ. शनी स्वरूप, पाश्चात्य काव्य शास्त्र के सिद्धांत पृष्ठ संख्या 82*
2. *सिंह संध्या कुमारी, परसाई जी का व्यंग्य साहित्य राजनीति के विविध आयाम।*
3. *प्रसाद कमला आखिन देखी पृष्ठ संख्या 37*
4. *वही पृष्ठ संख्या 37*
5. *गर्ग शेरजंग के व्यंग्य मूल भूत प्रश्न पृष्ठ संख्या 69*
6. *सारिका 1मार्च 1950 पृष्ठ संख्या 31*